# प्रेम वाहिनी

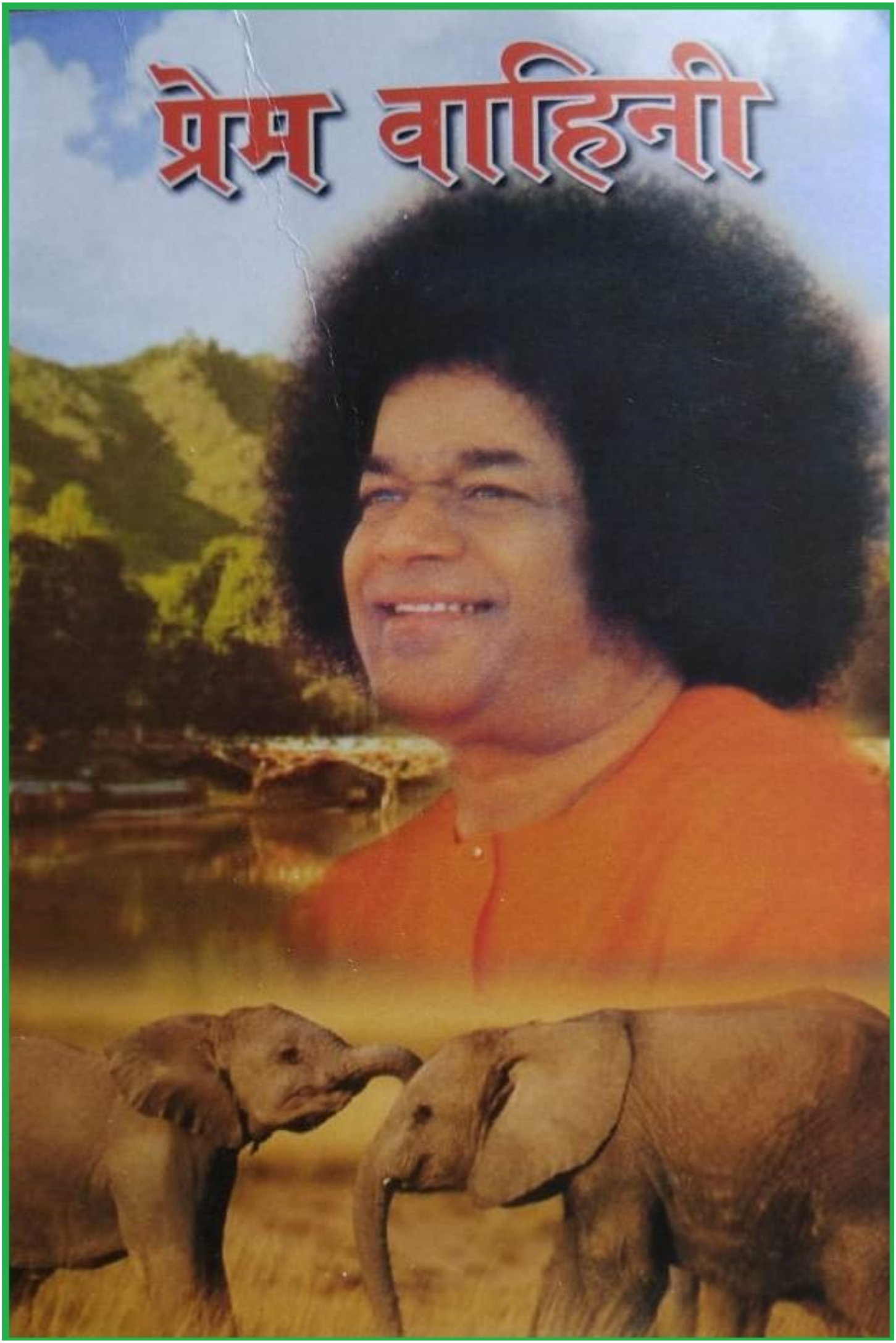

# १०

# भक्ति मार्ग के साधकगण

जो भक्ति मार्ग पर चलकर उस शाश्वत चिरन्तन सत्य को प्राप्त करने का आकाँक्षी है उसे निम्नांकित् विधि निषेधों का पालन करना चाहिये। उसे इस दुनिया के कोलाहल, क्रूरताओं और असत्य से दूर रहते हुये सत्य, धर्म, प्रेम और शान्ति का अभ्यास बढ़ाते जाना चाहिये, यही भक्ति का वास्तविक मार्ग है। जो भगवान में लीन होना चाहते हैं, उन्हें निन्दास्तुति, प्रशंसा और दोषारोपण, समृद्धि और रंकता, को समान भाव से निरर्थक समझकर त्याग देना चाहिए। उन्हें साहसपूर्वक अपनी आत्मा की सत्ता में अडिग विश्वास रखते हुये आध्यात्मिक उन्नति के लिए अर्पित हो जाना चाहिए। कोई भी, चाहे वह महापुरुष और अवतार ही क्यों न हो, आलोचना और दोषारोपण से बच नहीं सकता। परन्तु वे झुकते नहीं हैं। वे सत्य पर आरूढ़ रहते हैं। सत्य धमकियों की चिन्ता नहीं करता। महापुरुष अथवा अवतार की विशेष प्रकृति का ज्ञान केवल उन्हीं को हो पाता है जो आलोचना और दोषारोपण में लिप्त रहते हैं, क्योंकि जब वे असहनीय दुःखों और कष्टों के समुद्र को मँझा चुकते हैं..... तब वे भी प्रशंसा करने लग जाते हैं। अज्ञान की दुर्बलता ही उनकी सब असफलताओं का कारण होती है। इसलिए साधक को ऐसी संशयात्माओं और अज्ञानियों से विवाद में न उलझ कर उनसे अपनी निष्ठा और विश्वास की चर्चा न करके, दूर ही रहना चाहिए। उसे निरन्तर धार्मिक साहित्य के अनुशीलन और भगवान के भक्तों की सत्संगति में रहना चाहिए। बाद में, जग साक्षात्कार के बल से बलिष्ठ होकर, क्योंकि उसका सम्पर्क सत्य से हो चुका है, जब अपनी स्थिति दृढ़ कर ले तो वह किसी भी संगति में जा सकता है और अन्य मस्तिष्कों को भी उद्‌बोधित कर उन्हें सत्य के मार्ग का ज्ञान करा सकता है जिसका ज्ञान वह स्वयं प्राप्त कर चुका होवे।

जो लोग सत्कर्म करने और आत्म साक्षात्कार के मार्ग पर चलने को उत्सुक होते हैं उनकी तीन कोटियां होती हैं। (१) अधर्म, जोकि उपर्युक्त प्रयास प्रारम्भ करने में हानि, कष्ट और कठिनाइयों की सम्भावना से अत्यधिक भयभीत और सकुचाते रहते हैं। (२) मध्यम, जोकि यात्रा प्रारम्भ करके कुछ दूर जाकर विघ्न, बाधाओं और निराशा के कारण बीच में ही यात्रा समाप्त कर हतोत्साहित होकर बैठे रहते हैं। (३) उत्तम वे दृढ़ संकल्प वाले भक्त होते हैं जो शान्ति और साहसपूर्वक आध्यात्मिक मार्ग पर अध्यावसायपूर्वक दृढ़ता से चलते रहते हैं, चाहे कितने विघ्न, बाधायें और कष्ट आयें वे उन्हें पददलित कर अपना मार्ग बना लेते हैं। ऐसी लगन, ऐसा विश्वास और स्थिरता केवल भक्त चरित्र की ही विशेषतायें होती हैं।

इस मायामय संसार की आसक्ति से भ्रमित और पार्थिव सुखों से आकर्षित होकर स्थायी और पूर्ण आनन्द प्राप्ति के साधनों का विनिमय मत करो। पूर्ण भक्ति से अपने आध्यात्मिक कर्त्तव्यों को करते रहो। बिना विश्वास और लगन के परमात्मा का ज्ञान नहीं प्राप्त किया जा सकता। केवल प्रेम से ही श्रद्धा उत्पन्न होती है और केवल श्रद्धा से ही ज्ञान प्राप्त होता है, केवल ज्ञान से ही परा भक्ति प्राप्त होती है और केवल परा भक्ति से ही परमात्मा सुलभ होता है।

तो फिर प्रेम किस प्रकार प्राप्त होवे? यह दो प्रकार से किया जा सकता है। (१) दूसरे के बड़े से बड़े दोषों को उपेक्षणीय और नगण्य समझो। अपने नगण्य और उपेक्षणीय दोषों को बड़ा समझो। उनके लिए दुःखी हो और पश्चाताप करो। (२) जो कुछ भी तुम अपने प्रति अथवा दूसरों के प्रति करो, सदा यह स्मरण रखते हुए करो कि भगवान सर्वव्यापक है। वह सब कुछ देखता है, सुनता है और जानता है। जो कुछ तुम बोलो, याद रखो कि भगवान प्रत्येक शब्द को सुन रहा है; सद् और असद् में विवेक करो और केवल सत्य भाषण ही करो। जो कुछ तुम करो सदा, गलत और सही का विचार करके केवल सही काम करो। हर क्षण भगवान को सर्वशक्तिमान् जानते रहो। यह शरीर जीवात्मा का मन्दिर है इसलिए जो कुछ मन्दिर में होता है उससे

जीवात्मा भी सम्बन्धित होती है। इसी प्रकार यह संसार भी प्रभु का शरीर है और जो कुछ अच्छा या बुरा इसमें होता है उससे भगवान का सम्बन्ध रहता है। जीव और शरीर के तथ्यों का निरीक्षण करके, उस अज्ञेय भगवान् और संसार के सम्बन्ध का अनुमान लगाओ।

जीव और ईश्वर का सम्बन्ध, दोनों के पारस्परिक नाते का अनुमान ऐसा प्रत्येक व्यक्ति लगा सकता है जिसमें ३ विशिष्टतायें होंवें (१) घृणा और आसक्ति से शून्य मस्तिष्क (२) असत्यभाषण के दोष से रहित जिह्वा (३) हिंसा के दोष से रहित शरीर।

आनन्द और शान्ति बाह्य पदार्थों में नहीं निहित हैं वे तो स्वयं तुम्हारे ही अन्दर हैं। परन्तु लोग मूर्खतावश अपने से बाहर की दुनिया में, जिससे आज नहीं तो कल विदा होना ही है, इनकी खोज करते हैं। इसलिए शीघ्र सावधान हो जाओ। हर वस्तु का सारतत्व समझने की चेष्टा करो; जो कि शाश्वत सत्य है। उस प्रेम का अनुभव करो जोकि स्वयं परमात्मा का स्वरूप है। प्रतिपल विवेचना करते रहो, जो सत्य हो उसे स्वीकार करो और शेष असत्य का त्याग करो। जब तक व्यक्ति साँसारिक लालसाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित रखता है वह दुःख से नहीं बच सकता।